Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ला० १५५

ईश्वर और उसके गुड्डे

[एक बुद्धिवादी निबंध]

बहुजन कल्याण प्रकाश
३६०/१६३, मातादीन रोड, लखन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ला० १५५

ईश्वर और उसके गुड्डे

[एक बुद्धिवादी निबंध]

बहुजन कल्याण प्रकाश
३६०/१६३, मातादीन रोड, लखन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

…ा-माला—१३

ईश्वर और उसके गुड्डे

[एक बुद्धिवादी विचार-धारा]

लेखक

श्री चन्द्रिकाप्रसाद जिज्ञासु

प्रकाशक

बहुजन कल्याण प्रकाशन

३६०/१६३, मातादीन रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

प्रकाशक
बहुजन कल्याण प्रकाशन
३६०/१९३ मातादीन रोड
लखनऊ

पूज्यचरण
गुरु बोधानंदजी महास्थविर
की पुण्य-स्मृति में

विषय-सूची

विषय .... पृ
१. उपक्रम ....
२. ईश्वर-वादियों की दलीलें ....
३. अनीश्वर-वादियों की दलीलें ....
४. ईश्वर की ओट में शिकार ....
५. सार्वभौमिक ईश्वर ही असली ईश्वर हो सकता है ....
६. क्या कवियों द्वारा कल्पित ईश्वर ईश्वर नहीं ? ....
७. असली ईश्वर और कल्पित ईश्वर ....
८. 'गुड़िया-सरकार' और 'गुड़िया खुदाई' ....
९. प्राचीन क्षत्रिय-ब्राह्मण संघर्ष और ब्राह्मणों की विजय.... ....
१०. राम-रावण-युद्ध का ऐतिहासिक रहस्य ....
११. राम और रावण की तुलनात्मक नैतिकता ....
१२. ब्राह्मणों के शाप का आतंक ! ... .
१३. विष्णु के अवतार किस लिए होते हैं ? ....
१४. महर्षि दयानंद और उनका सत्यार्थप्रकाश ....
१५. आर्यसमाज के साथ ब्राह्मण-पंडितों का पैक्ट और उसका परिणाम पाकिस्तान ....
१६. साम्प्रदायिकता-विस्तार का एक नया लटका, कीर्तन ....
१७. उपसंहार ....

प्रथमावृत्ति, १९५९
मूल्य ५० न० पै०

क
र प्रेस,
खनऊ

Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

❀ बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय ❀

ईश्वर और उसके गुड्डे

उपक्रम

ईश्वर के सम्बन्ध में इस धरती पर दो प्रकार के प्रमुख विचार पाये जाते हैं : एक यह कि इस सृष्टि का स्रष्टा अथवा अनंत रचना का रचयिता एक ईश्वर है। वह ईश्वर सर्वशक्तिमान और सबका प्रभु है। उसी की इच्छा, सत्ता और सामर्थ्य से सब कुछ हुआ और हो रहा है; बिना उसकी मरजी के न कोई पत्ता हिल सकता और न कोई परमाणु गति कर सकता है। इस मत के माननेवालों में मूसाई, ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, आर्यसमाजी और कुछ हिंदू साधु-संत आदि हैं। इसके विपरीत दूसरा मत यह है कि इस असीम सृष्टि या रचना का स्रष्टा या रचयिता कोई ईश्वर विशेष नहीं है। यह सब स्वतःसंभूत है, और स्वाभाविक कारणों से नियम-बद्ध चल रही है। इस मत के माननेवालों में चार्वाक, जैन, बौद्ध और सांख्य-वैशेषिक इत्यादि हिंदू दार्शनिक तथा विकासवादी वैज्ञानिक विद्वान् आदि हैं।

तीसरा और दुनिया से निराला एक मत भारतीय हिंदुओं के धर्म-गुरुओं ने चला रखा है, जिन्होंने सब जानते-समझते हुए भी, अपनी भोगैश्वर्य-प्रसक्तता-प्रवृत्ति से पराभूत हो अपने प्रभुत्व-संरक्षण और भोगों की सुलभता के लिए, अपनी संपूर्ण शक्ति और संपूर्ण प्रतिभा से, ऐसे ईश्वरों अथवा ईश्वर के अवतारों की कल्पना और स्थापना कर रखी है जो उनके विचारों के अंधभक्त, उनके परम हितैषी, ... चाप के नुवर्ती सेवक, उनके मंतव्यों को बलपूर्वक जनता से म... को खिलाया उनके विरोधियों के संहारकारी हैं। ताकि वे निर्भ... यह सब ठग- निष्कंटक भाव से जन-शोषण और समाज-दोहन क... क दिखलाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

व्यापार में बाधक न हो ! जीवन-यापन के लिए कड़ी मिहनत न करनी पड़े ; काव्य-कला के विनोद में ज़िंदगी आराम से कटे !!

इस बुद्धिवादी युग में, जब कि प्रत्येक बात को वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से देखने सोचने-समझने की लोगों में आदत हो गई है, प्राचीन काल की हेतु-शून्य धर्मान्धता आज के बुद्धिवादी मस्तिष्क को ग्राह्य और मान्य नहीं है। थोड़े-से स्वार्थी और चालाक व्यक्तियों द्वारा विशाल बहुजनसमाज को सदाकाल मूर्ख बनाये रखने का प्रयत्न अब संभव नहीं है और देश को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने की दृष्टि से वांछनीय भी नहीं है। स्वतंत्र भारत के सुशिक्षित नागरिकों एवं प्रगतिशील नवयुवकों में दैनंदिन विचार-स्वातंत्र्य बढ़ता जा रहा है। दिमाग़ी गुलामी और अन्ध-परंपरा प्रगति के मार्ग में केवल बाधक ही नहीं अपितु अशोभनीय एवं उपहासास्पद है। निःसंदेह उस युग में, जब कि रूस और अमरीका का नवयुवक चंद्रलोक में अपना उपनिवेश बसाने के प्रयत्न में होड़ लगाये हो, यह अत्यंत दुर्भाग्य-पूर्ण ही कहा जायगा कि उसी युग में भारतीय युवक आकाश अथवा किसी मूर्तिविशेष की ओर सतृष्ण लोचनों से तकता हुआ कूल्हे मटकाते, ताड़ी बजाते, हारे रामा हारे कृष्णा चिचियाते हुए उचकने और थिरकने में अपना परम पुरुषार्थ एवं जीवन-साफल्य समझ रहा हो !

इस छोटी पुस्तक के अगले पृष्ठों में इन्हीं बातों पर विचार और स्पष्टीकरण किया गया है। पाठक महोदयों से प्रार्थना है कि निष्पक्ष भाव एवं निरुद्विग्न चित्त से, सहृदयता-पूर्वक पढ़ने और शांत भाव से विचार करने की कृपा करें।

ईश्वर-वादियों की दलीलें

ईश्वर-वादियों की सबसे बड़ी दलील है 'कर्तृवाद' या 'कार्य-कारण-कार्य देखकर कारण का अनुमान। सूर्य, चंद्र, तारे, अग्नि, जल, मेघ, विद्युत्, पृथ्वी, पहाड़, जंगल, नदी, वृक्ष, फल-फूल, पशु-पक्षी, कीट-उरंग, जलचर, थलचर,

In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नभचर और मनुष्य आदि कार्य देखकर मनुष्य ने यह कल्पना की कि इस अखिल सृष्टि का कोई स्रष्टा अवश्य होगा। फिर एक नियम के वशवर्ती हो सूर्य-चंद्र का उदय और अस्त होना, एक नियम के अधीन जाड़ा, गर्मी, बरसात ऋतुओं का आना-जाना, एक नियम के अधीन दिन, रात, पाख, मास, वर्ष का होना और एक नियमानुसार प्रजनन एवं वनस्पतियों का उगना इत्यादि देखकर यह कल्पना हुई कि इस नियमबद्धता का कोई नियामक अवश्य होगा। इस सृष्टि का जो स्रष्टा और नियामक है, वही ईश्वर है और वह परम दयालु है। उसने हमारे भोग और सुख के लिए इन सब चीज़ों को बनाया और हमें इतना सुंदर और कारीगरी से भरा शरीर दिया। अतः हमारा आवश्यक कर्तव्य है कि हम अपनी कृतज्ञता प्रकाश करने के लिए उसकी प्रार्थना-उपासना करें और उसकी कृपा व निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करें, क्योंकि वह महान् और सर्वसमर्थ है। चूँकि सृष्टि का उद्भव, स्थिति एवं संहार होते रहने पर भी यह सदा नियमबद्ध ही रहती है, इससे यह विश्वास होता है कि इसका कर्ता 'नित्य-सत्य' है, उसका कभी विनाश नहीं होता। इत्यादि।

सूसाई, ईसाई, मुसलमान, सिक्ख, आर्य-समाजी और ईश्वरवादी संतों का प्रायः ऐसा ही मत है। बाइबिल और क़ुरान में ईश्वर के संबंध में ऐसा ही वर्णन हुआ है। गुरुनानक ने अपने शिष्यों को जो मंत्र दिया, उसमें उन्होंने बताया—"वह ओंकार एक है, उसका नाम सत्य है, वही कर्ता पुरुष है, वह निर्भय और निर्वैर है, वह अकाल है (कभी मरता नहीं), वह अयोनिज है (कभी जन्मता नहीं), आदि में वह सत्य था, युगों के अंत (महाप्रलय) में भी वह सत्य रहेगा और वर्तमान में भी वह सत्य है। यह सत्य ज्ञान गुरुनानक का प्रसाद है। इसी का जप करो।"

ईश्वरवादी दूसरे संतों ने भी ईश्वर के संबंध में मिलता-जुलता प्रायः ऐसा ही संगायन किया है।

ईश्वर की सर्वोपरिय सत्ता की अनुभूति-संबंधी तर्कों का खिलाया है कि सृष्टि में सब से अधिक ज्ञान और शक्ति संपन्न प्राणी यह सब ठगमनुष्य अपनी इच्छा में स्वाधीन नहीं, अपने प्रयत्नों का दिखलाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by

बलवती शक्ति से वह पराजित हो जाता है ; मानव द्वारा असाधारण अध्यवसाय से बनाई इमारत क्षण-मात्र में ढेर हो जाती है ; दिन-रात परिश्रम करनेवाला विद्यार्थी फेल हो जाता है और दूसरा निठल्ला प्रथम श्रेणी में पास हो जाता है ; एक बड़ी सूझवाला कुशल व्यापारी हमेशा घाटा सहता है, दूसरा बुद्धू अनायास लाखों पा जाता है ; एक बहुत बड़ा विद्वान् छोटी-सी नौकरी को तरसता है, दूसरा मूर्खानंद भारी अफसर बना बैठा लम्बी तनखाह मार रहा है ; एक सर्वसंपन्न पुरुष सन्तान के नाम से एक चुहिया के लिए तरसता है, दूसरा दर्जनों संतति का पिता है जिनका पालन तक नहीं कर सकता ; एक जड़ लंठ महा सुन्दरी रमणी का स्वामी है, दूसरा सहृदय कलाकार किसी कुरूपा कंकाला चंडी का मर्दुआ है ; एक सब प्रकार सुरक्षित मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है, दूसरा आग, गोली-वर्षा, भूचाल, जहाज फटने और भयंकर हिंस्र प्राणियों के बीच भी सुरक्षित रहता है। इत्यादि। ईश्वरवादी कहते हैं यह सब प्रभु की लीला है। जैसा वह चाहता है, करता है। जिसे जिलाना चाहता है, उसे कोई मार नहीं सकता और जिसे मारना चाहे उसे कोई बचा नहीं सकता। वह क्षण में दरिद्री को धनकुबेर और लक्ष्मीपति को भिखारी बना देता है ! बस उसकी कृपा पाने का प्रयत्न करो।

उसके अस्तित्व की प्रतीति के सम्बन्ध में ईश्वरवादी कहते हैं, वह धातुओं और पत्थरों में सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणुओं को जोड़े हुए उन्हें कठोर और कठोरतम बनाये हुए है, वह वनस्पतियों में पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है, वह पशुओं में गमन और पक्षियों में उड़नशीलता की शक्ति है, वह मनुष्यों में ज्ञान है। वह पुष्पों में सौंदर्य और शिशुओं में मुस्कान है। वह वनिताओं में कोमलता और प्रेम है। आजकल लोग [illegible]से सत्यं-शिवं-सुन्दरम् कहने लगे हैं। मतलब यह कि जो कुछ सत्य है, [illegible]ल्याणकारी है और जो सुन्दर है, वह उसी का रूप है।

[illegible]र्णन में ध्यान में रखने की बात यह है कि इसमें ईश्वर के [illegible]णों और गुणों का बखान हुआ है, वे सब किसी सर्वव्यापी [illegible]श्वर में ही घटित होते हैं।

In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनीश्वर-वादियों की दलीलें

आइए, अब ज़रा अनीश्वरवादियों की दलीलों को भी देखें। नास्तिकों में सर्व प्रथम चार्वाक का नाम लिया जाता है। इस दर्शन का रचयिता देवगुरु बृहस्पति का शिष्य बताया जाता है, और इसका मत भगवान् गौतम बुद्ध से पूर्व प्रचलित था। इसका कहना था कि वेद, ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, यज्ञ, श्राद्ध आदि सब धूर्तों की ठगविद्या है। केवल जीवन सत्य है, देह ध्वंस होने पर आत्मा-वात्मा कुछ नहीं रह जाता। त्रयो वेदस्य कर्तार: भंड-धूर्त-निशाचर: अर्थात् तीनों वेदों के कर्ता भांड, धूर्त या निशाचर हैं। भँडैती कहते हैं झूठी तारीफों को। जैसे कि ईश्वर के हज़ार शिर हैं, हज़ार हाथ हैं, हज़ार पैर हैं और फिर वह बिना पैर के चलता है, बिना हाथ के सब काम करता है, बिना कान के सुनता है, बिना मुँह के बोलता और बिना आँखों के देखता है। इत्यादि। यह सारा प्रलाप भँडैती के सिवा और कुछ नहीं। झूठा प्रलोभन देकर दूसरों का धनापहरण करना धूर्तता है। तुम्हारे पुत्र नहीं है, तो तुम पुत्रेष्टि यज्ञ करो; तुम्हारे पास धन नहीं है, तो तुम धनकामना से यज्ञ करो। ये सब धूर्तता की बातें हैं और चूँकि समस्त वैदिक कर्मकांड प्राय: रात में ही हुआ करते हैं, जब कि समस्त प्राणियों के सोने का समय होता है, इसलिए उसे निशाचरों का स्वाँग कहा गया। चार्वाक कहता है, यदि यज्ञ में बलि देने से पशु स्वर्ग को जाता है, तो लोग अपने माँ-बाप की बलि देकर उन्हें सीधे स्वर्ग क्यों नहीं भेज दिया करते? यदि श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराने से वह भोजन पितरों के पेट में पहुँच जाता है, तो लाओ तुम्हारे मा-बाप को तीन दिन भूखा रखकर हम उन्हें मकान की तीसरी मंज़िल पर बिठा दें और उनके नाम पर नीचे आँगन में ब्राह्मण-भोजन करायें। यदि वह भोजन केवल तीसरी मंज़िल पर बैठे भूखे माँ-बाप के पेट में भी न पहुँचे, तो कैसे विश्वास किया जाय कि ब्राह्मण को खिलाया भोजन सुदूर स्वर्ग में बैठे पितरों के पेट में पहुँच जाता है? यह सब ठग-विद्या और धूर्तता है। यदि ईश्वर है, तो उसे प्रत्यक्ष करके दिखलाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eG

जैन-विद्वान् भी सृष्टिकर्ता ईश्वर, वेद, यज्ञ और वर्ण-व्यवस्था को नहीं मानते। वे वैदिक यज्ञों को तो हिंसा-पूर्ण महापाप कहते हैं। जैन विद्वान् वैदिक कर्मकांडों को ही मिथ्या नहीं कहते, वे अद्वैत ब्रह्मवाद और एकात्मवाद का भी मज़ाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं, यदि एक ही आत्मा है, तो क्या वह चींटी में चींटी-जैसा बिलकुल छोटा और हाथी में हाथी-जैसा बड़ा भारी हो जाता है? बिल्ली में ठुमका और साँप में लम्बा हो जाता है? फिर जीवित केंचुए को बीच से काट डालने पर उसके दोनो टुकड़े जीवित रहते हैं, तो क्या आपका आत्मा खंडित भी हो जाता है? जैनों के मत में सृष्टि अनादि है। इसमें जीवाजीव अर्थात् जड़-चेतन दो तत्व हैं। चेतन मनुष्य जब सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र्य की पूर्णता पर पहुँच जाता है, तो वह सर्वोपरिय भगवान् पद को प्राप्त करके वंदनीय और दर्शनीय तीर्थंकर हो जाता है।

बौद्ध लोग भी ईश्वर, आत्मा, वेद, वर्णव्यवस्था और यज्ञ को नहीं मानते। भगवान् गौतम बुद्ध ने उपदेश दिया कि परमार्थ या निर्वाण-प्राप्ति में ये कोई सहायक नहीं हैं। उनके उपदेशानुसार परम शांति और निर्वाणप्राप्ति का सम्यक् मार्ग चित्त की विशुद्धि और सदाचार-परिपूर्ण आर्य अष्टांगिक मार्ग है। उनके मत से राग-द्वेष-मोह से रहित, विशुद्ध दिव्य चक्षु और आश्रव-रहित (पाप-हीन) चित्त से शील-संपन्न हो विहार करना ही मानव जीवन का ध्येय है। ईश्वर के संबंध में तथागत का कर्तावादियों से तर्क है कि यदि प्रत्येक कार्य का कोई कारण आवश्यक है, तो ईश्वर का भी कोई कारण होना चाहिए। यदि जगत् का उपादान-कारण ईश्वर है तो जगत् में जो बुराई-भलाई, सुख-दुख, दया-क्रूरता, राग-द्वेष आदि देखा जाता है, इस सबका कारण भी ईश्वर को ही होना पड़ेगा। और चूँकि संसार में दयालुता की अपेक्षा क्रूरता ही अधिक देखी जाती है, तो क्रूरता के आधिक्य का कारण भी ईश्वर ही है। अदृश्य कीटाणुओं से लेकर बड़े कीड़े, छिपकली, सर्प, सिंह आदि जीव और द्वेषी, दुष्ट मनुष्यों का ही संसार में आधिक्य है, तो इन सब का भी कारण ईश्वर ही होगा। तब इन दुष्ट जीवों का रचयिता ईश्वर निर्विकार कैसे होगा?

0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि कहें कि ईश्वर उपादान कारण नहीं अपितु निमित्त कारण है। जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़े को और सुनार सोने से कुण्डल आदि बनाता है वैसे ही ईश्वर उपादान कारण पुद्गल या प्रकृति से सृष्टि-रचना करता है. तो प्रश्न होगा कि इस उपादान कारण का कारण क्या है ? यदि कहो कि उपादान का कोई कारण नहीं है, तो फिर अभाव से भाव की उत्पत्ति माननी पड़ेगी, और कार्य-कारण का सिद्धांत ही खत्म हो जायगा—सृष्टि को रचकर स्रष्टा की कल्पना बिलकुल व्यर्थ सिद्ध होगी।

दूसरी आपत्ति यह कि ईश्वर यदि उपादानकारण प्रकृति से सृष्टि बनाता है, तो प्रश्न होगा कि वह कुम्हार की तरह उपादान से अलग रहकर बनाता है या उसमें व्याप्त होकर ? यदि अलग रहता है, तो ईश्वर सर्वव्यापक नहीं रहता, और उपादान के बिना सृष्टि-रचना करने में अक्षम होने के कारण ईश्वर सर्वशक्तिमान नहीं ठहरता।

इत्यादि तर्कों का उत्तर न होने से कर्तृवाद (या कार्य-कारणवाद) की कल्पना ही खत्म हो जाती है। ईश्वर न उपादान कारण ठहरता है, न निमित्त कारण। फिर यदि इस बात पर जिद्द की जाय कि बिना स्रष्टा के सृष्टि अर्थात् बिना कारण के कार्य हुआ कैसे ? तो प्रश्न होगा कि फिर ईश्वर का कारण कौन है ? फिर उसका कारण कौन ? और फिर उसका कारण कौन ? यदि इन कारणों के कारण का कहीं अन्त न हो, तो इस कार्य-कारण तर्क को ही निःसार क्यों न मान लिया जाय ?

फिर यह कथन तो बड़ा ही भद्दा और उपहासास्पद है कि बिना ईश्वर की मरजी के पत्ता हिल नहीं सकता अथवा ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में विराजमान होकर मदारी की कठपुतली की तरह सबको भ्रमाता और नचाता है। मनुष्य यदि ईश्वर के हाथ की कठपुतली है तो फिर वह किसी भी भले-बुरे काम या पाप-पुण्य का उत्तरदायी नहीं हो सकता। तो फिर मनुष्यों को बुरे कर्मों और पापों का जो दंड मिलता है, वह ईश्वर का अन्याय है ; दयालुता कदापि नहीं। तब वह रहमान कैसा ?

यदि सृष्टि को कारण-रहित अनादि कहा जाय तो उसे अपने कार्य के लिए किसी कर्ता की आवश्यकता नहीं रहती। यदि सृष्टि सादि है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by

तो उसके आरंभ की करोड़, अरब, खरब वर्षों की कोई अवधि अवश्य माननी होगी, तब प्रश्न होगा कि सृष्टि के पूर्व संख्यातीत समय तक क्या ईश्वर निष्क्रिय निठल्ला रहा होगा !

इत्यादि तर्कों का कोई उत्तर न होने से न ईश्वर ठहरता है और न कर्तृवाद और कार्य-कारणवाद।

तथागत ने आत्मा को भी 'गीता' आदि हिंदू-ग्रन्थों की तरह नित्य, कूटस्थ, अजर, अमर, अछेद्य, अदाह्य, अशोष्य, सर्वगत, स्थाणु, अचल, सनातन आदि नहीं माना। उन्होंने इसका भी समर्थन नहीं किया कि आत्मा शरीरों को कपड़ों की तरह पहने हुए है, देहावसान के समय आत्मा पुराने कपड़े की तरह शरीर बदलकर नया शरीर धारण कर लेता है। तथागत का कहना है कि हमारा शरीर क्षण-क्षण में बदलता रहता है। दस वर्ष की आयु में जो शरीर था, चालीस या पचास वर्ष की आयु में वही शरीर नहीं रहा। उसके सब परमाणु बदल गये। शरीर का एक-एक परमाणु प्रतिक्षण अपना स्थान नये परमाणु के लिए खाली करता रहता है। इस बदलते रहने की क्रिया का नाम ही जीवन है। दीपक की ज्योति जैसे ज्वलनशील परमाणुओं का प्रवाह है, जो अंत में बुझकर धूम्र और काजल बन जाते हैं, वही दशा चित्त की है। अनंत-असंख्य जल-कणों के प्रवाह का नाम जैसे गंगा आदि नदियों की धारा है, उसी प्रकार चित्त-संतति-प्रवाह का नाम मन है और मन ही आत्मा है; मन या चित्त से परे आत्मा की कोई प्रथक् सत्ता नहीं। मृत्यु के समय चित्त-प्रवाह अपनी तृष्णा और संस्कार-समूह के साथ नये शरीर में प्रवेश करता है, जिसे पुनर्जन्म कहा जाता है। तृष्णा के क्षय होने से ही चित्त-संतति विशृंखलित होती है, तभी जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिल सकती है।

इस तरह ईश्वर और आत्मा दोनो का अस्तित्व बौद्धों को मान्य नहीं है। इसी से वे क्षणिकवादी और शून्यवादी भी कहे जाते हैं।

हिंदुओं के न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, सांख्य, योग और वेदान्त नाम के प्रसिद्ध छः दर्शनों में से चार निरीश्वरवादी हैं। न्याय और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वैशेषिक यद्यपि खुलकर ईश्वर का खण्डन नहीं करते, परन्तु दुःख-नाश अथवा निःश्रेयस, अपवर्ग या मोक्ष-प्राप्ति का जो उपाय इन दर्शनों में प्रतिपादित हुआ है, उसमें ईश्वर का तनिक भी लगाव नहीं है। इस उपेक्षा को एक प्रकार निरीश्वरता ही कहा जायगा। मीमांसा दर्शन खुला निरीश्वरवादी है। वह केवल यज्ञों को ही निःश्रेयस का उपाय बताता है। मीमांसकों के मत में यज्ञ करने से ही जीव अमर हो जन्म-मरण के बन्धन से विनिर्मुक्त हो जाता है। चौथा सांख्य दर्शन है जो खुले तौर पर कहता है कि ईश्वर के होने का कोई प्रमाण न होने के कारण ईश्वर सिद्ध ही नहीं होता। सांख्य के मत में प्रकृति और पुरुष दो चीज़ें हैं। पुरुष जब प्रकृति के मोह-पाश से ज्ञान द्वारा अपने को अलग कर लेता है, तो वह मुक्त हो जाता है। प्रकृति में विकृति स्वतः होती है, उसे सृष्टि-रूप होने में किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं होती। हाँ, पतंजलि के योग दर्शन में चित्त-वृत्ति-निरोध के लिए बताये गये नाना उपायों में एक उपाय ईश्वर-प्रणिधान भी है। और वेदांत दर्शन का प्रमुख विषय ही ब्रह्म-जिज्ञासा है। इसीलिए इसे ब्रह्मसूत्र भी कहा जाता है। वेदांत दर्शन के ब्रह्मवाद को लेकर ही अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, निर्विशिष्टाद्वैतवाद, अभेदवाद, भेदवाद, अनिर्वचनीय भेदाभेदवाद आदि नाना वादों की सृष्टि हुई, और ईश्वर-विषयक धींगाधींगी का बाज़ार खुल गया। ब्रह्मसूत्र, गीता और दस उपनिषदों का नाम 'प्रस्थानत्रयी' रखा गया है। जो कोई भी अपने मत के अनुसार प्रस्थानत्रयी का भाष्य कर देता है, उसका मत ब्राह्मण पंडित चला देते हैं।

विज्ञानविदों में, हम देखते हैं, प्रायः सभी महामति डारविन के विकासवाद के कायल हैं, और विकासवाद में ईश्वर की कहीं गुंजायश नहीं है। वहाँ केवल प्रकृति है और समस्त रचना प्रकृति का क्रमिक विकास है। इसका विस्तृत वर्णन हमने "सृष्टि और मानव-समाज का विकास" नामक बड़ी पुस्तक में किया है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद हमारे समस्त ज्ञान, धर्म-कर्म और विधि-व्यवस्था का मूलाधार हैं, इस विश्वास में किसी को कोई आपत्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं हो सकती। किंतु जब यह कहा जाता है कि वेदों में जो कहा गया है वही धर्म है, शेष सब अधर्म है, और वेद अनादि अपौरुषेय हैं, तो दूसरों पर हमला होने के कारण यह दावा आपत्तिजनक हो, जाता है और लोग उत्तर देने लगते हैं कि जब स्वयं सांख्य आदि हिंदू-दर्शनों के मत से ईश्वर ही असिद्ध है, तो ईश्वर का ज्ञान कहाँ से आ गया ? फिर वेदों में जब आर्यों और दस्युओं एवं दूसरे युद्धों के उल्लेख हैं, तो ये सब घटनाएँ किसी काल विशेष की ही हो सकती हैं। जिस ग्रंथ में इनका वर्णन हो, वह अनादि कैसे हो सकता है ?

इसके अतिरिक्त 'वेद' शब्द का धात्वर्थ है "जाना गया"। तो मानवी ज्ञान, ध्यान, अनुभव और परीक्षण करके जो कुछ 'जाना गया' है, वह सभी 'वेद' क्यों नहीं है ? तीर्थंकर महावीर, गौतम बुद्ध, मसीह, मोहम्मद, कबीर, नानक, दादू, रैदास आदि सन्तों द्वारा जो कुछ 'जाना गया', वह सब 'वेद' क्यों नहीं है ? और आधुनिक भौतिक विज्ञान के परीक्षणों द्वारा भूगोल, खगोल, भूगर्भ, वाष्प, विद्युत्, अणु-शक्ति व असीम यंत्र-कला आदि का जो हाल 'जाना गया' वह सब 'वेद' क्यों नहीं ? फिर यदि वेद 'श्रुति' अर्थात् 'सुना गया' है, तो आर्य ऋषियों के अतिरिक्त मूसा, जरतुश्त, ईब्राहीम, ईसा और मोहम्मद आदि पैगम्बरों से जो 'सुना गया' वह सब 'श्रुति' क्यों नहीं है ? क्या पक्षपात, संकीर्णता और कूप-मंडूकता इसे मानने में बाधक है ?

ईश्वर की ओट में शिकार

बाइबिल में लिखा है कि "शैतान मनुष्यों को केवल जेहोवा परमेश्वर से विमुख ही नहीं करता, कभी-कभी नकली ईश्वर खड़े करके मनुष्यों को गुमराह भी करता है और उन्हें अपना अनुयायी व दास बना लेता है।" कुरान में भी इबलीस (शैतान) के बारे में यही बात जोरदार शब्दों में कही गई है। शैतान को नकली ईश्वर पेश करने की जरूरत तब होती है जब लोग शैतान से छनक जाते हैं और उसकी बातों के मानने से इनकार करने लगते हैं। उस समय चतु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शैतान नकली ईश्वर और नकली पैगम्बर खड़े कर देता है, और उनके द्वारा जनता में ऐसी बातों का प्रचार कराता है जिससे शैतान की पूजा होने लगती है, और जनता बहकाने में आकर अपने परवरदिगार असली रहमान को भूलकर उससे दूर हो जाती है।

शैतान के सम्बन्ध में क़ुरान शरीफ में बड़ी मनोरंजक और रहस्यपूर्ण कथा लिखी है। शैतान का नाम इबलीस है। उसे परवरदिगार ने अग्नि से पैदा किया और आदम को मिट्टी से। फिर जब परवरदिगार ने आदम के आगे सबको झुकने का हुक्म दिया, तो सब झुक गये, मगर इबलीस न झुका। परवरदिगार ने न झुकने का कारण पूछा, तो उसने अहंकार से उत्तर दिया, आदम मिट्टी से पैदा हुआ, और मैं आग से। आग से पैदा होने के कारण मैं श्रेष्ठ हूँ, मैं आदम के आगे कैसे झुक सकता हूँ ? तब परवरदिगार ने कहा—तू घमंडी और नीच है, तू यहाँ से निकल जा।.... तब शैतान यह कहकर निकल गया कि जैसी तूने मेरी राह मारी है, मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर मनुष्यों को न चलने दूँगा। मैं मनुष्यों को तुझसे विमुख करके उनसे अपनी पूजा कराऊँगा।

क़ुरान शरीफ की इस कथा का रहस्य हम नहीं जानते। किंतु हिंदू-शास्त्रों में हमने पढ़ा है कि अग्नि और ब्राह्मण परमात्मा के मुखसे उत्पन्न हुए (ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् । मुखादग्निरजायत्) । और भगवान के अग्निमुख से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। अस्तु।

हिंदू-विद्वान् शैतान की तुलना 'मार' व 'कामदेव' से करते हैं, जो मनुष्यों को मोह-ममता और भोग-ऐश्वर्य में फँसाता है। गोसाईं तुलसीदास ने इसे 'इंद्रिय-सुरों' की संज्ञा दी है। उनके मतानुसार इंद्रियों के झरोखों पर 'देवता' लोग बैठे हुए विषयाग्नि को भड़काया और उसी में मनुष्यों को झोंका करते हैं। मनुष्यों के भीतर ज्ञान का प्रदीप जलने नहीं देते, क्योंकि इन इंद्रिय-सुरों को 'ज्ञान' सोहाता नहीं, विषय-भोग ही पर इनकी सुदृढ़ प्रीति है। ज्ञान-विज्ञान-सदाचार के ये वैरी हैं।

तफसीर में हमने पढ़ा है कि नफ्सपरस्त अर्थात् भोगैश्वर्य में प्रसक्त व्यक्ति ही शैतान या शैतान के बच्चे हैं जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

किसी भी पाप के करने से नहीं झिझकते। भोगाभिमुख प्राणी अपनी भोग-सुलभता के लिए नाना प्रकार के मायाजाल फैलाकर भोली-भाली जनता को बहकाया करते हैं। और जब जनता इन्हें पहचानकर इनकी बातों पर अविश्वास करने लगती है तो नक़ली और गुड्डे ईश्वरों की सृष्टि करके उनसे अपनी पूजा करवाकर जनता को आतंकित और भय-भीत करके उसे अपनी आज्ञानुवर्तिनी और अपना दास बना लिया करते हैं। और फिर नाना प्रकार के पाखंडजाल रचकर जनता का शोषण किया करते हैं। भोली-भाली जनता इनके कारण वास्तविक ईश्वर और यथार्थ धर्म से विमुख होकर इनके द्वारा खड़े किये गये गुड्डे ईश्वरों की चमक-दमक और लीलाओं में फँस जाती है और धर्माभास या मिथ्या धर्म का आचरण करने लगती है। और ये लोग ईश्वर की ओट में जनता का शिकार किया करते हैं।

सार्वभौमिक ईश्वर ही असली ईश्वर हो सकता है

संसार के प्रायः सभी विचारवान् ईश्वरवादियों का मत है कि ईश्वर केवल एक है, और वह सबसे बड़ा, सबका सिरजनहार, सबका पिता, सबका मालिक और सबसे परे है। वह सबमें है और सब कुछ उसके अन्तर्गत है। वह चराचर अणु-परमाणु में व्याप्त है और अपरिसीम हो सबको घेरे भी है। वह मनुष्य में पिंडात्मा और विश्व में विश्वात्मा है। वह निष्कल, निरंजन, निर्विकल्प, निर्गुण, निर्विकार और निराकार भी है तथा समस्त शक्ति, समस्त ज्ञान और परम शांति का आगार भी। ज्ञानी सन्तों ने उसे अलख, अगोचर, अनाम, अरूप, अनादि, अनन्त असीम, अजन्मा, अजर, अमर, अविनाशी, अकाल, असंवेद्य, अपरिज्ञेय और महाशून्य भी बताया है।

हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख आदि सभी धर्मों के ज्ञानी पुरुष और संत-महात्मागण ईश्वर के संबंध में प्रायः ऐसी ही बातें कहते आये हैं। प्रश्न होता है कि ईश्वर यदि सचमुच ऐसा ही है, तो फिर निःसंदेह वह किसी जाति-विशेष या धर्म-विशेष की बपौती नहीं हो सकता। उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो इस पृथ्वी का ही नहीं, वरन् चंद्र, सूर्य, तारे और आकाश में स्थित अनन्त ब्रह्मांडों का एकमात्र स्वामी होना चाहिए। उसके विषय में तो यही कहना ठीक होगा कि समस्त अस्ति-भाति अर्थात् जो कुछ हस्ती में है या जो कुछ प्रतीत होता है, उस सबका वह एकमात्र प्रभू है। और हम देखते हैं, भूतल केप्राय: समस्त ईश्वरवादियों ने उसे ऐसा ही माना भी है।

ईश्वर यदि अनंत कोटि ब्रह्मांडों का स्वामी और सर्वोपरिय है, तो फिर यह बात भी मान लेना होगी कि वह इस भूगोल का भी, जिस पर हम रहते हैं, मालिक, खालिक और प्रभू होगा। एशिया, योरप, अफ्रीका, अमरीका और आस्ट्रेलिया आदि सभी महाद्वीपों और द्वीपसमूहों का वह अकेला विधाता होगा और सभी महाद्वीपों व द्वीपसमूहों के जीवधारी या कम-से-कम मनुष्य-तनधारी जब उससे प्रार्थनाएँ करते होंगे, तो वह उन्हें सुनता, समझता और सबको यथोचित भला-बुरा फल देता होगा। नि:सन्देह वह सब देशों की भाषाएँ भी जानता होगा। चीनी, जापानी, हबशी, अमरीकी, फ्रांसीसी, जर्मनी, अंग्रेजी, रूसी, अरबी, फारसी, लातानी, यूनानी, पाली, प्राकृत, वैदिक, संस्कृत, हिंदी, पंजाबी, बंगाली, मराठी, गुजराती, कनारी, तामिल, तेलगू, पश्तो, पहाड़ी, हो, मुन्डा, मैथिल आदि सभी बोलियों को वह समझ लेता होगा। यह कहना कदापि ठीक नहीं हो सकता कि संस्कृत या अरबी में जो प्रार्थनाएँ की जाती हैं, उन्हें तो वह समझ लेता है, किंतु द्राविड़ी, मंगोली, तिब्बती, तातारी या रूसी आदि भाषाओं में की जानेवाली प्रार्थनाओं या दी जानेवाली गालियों को वह समझ ही नहीं पाता। और यह दावा भी दुरुस्त नहीं हो सकता कि अरबी या संस्कृत-भाषाओं में की गई प्रार्थनाएँ उसे अधिक पसंद हैं, चीनी और अफ्रीकी भाषाओं की प्रार्थनाएँ उसे उतनी पसन्द नहीं हैं क्योंकि साहित्यिक दृष्टि या अदबी नुक्ता-ए-नज़र से संस्कृत व अरबी प्रार्थनाओं की अपेक्षा वे बहुत घटिया दर्जे की और भद्दी होती हैं। यदि ये दावे सत्य मान लिये जायँ, तो ईश्वर की महानता और सर्वोपरियता में दोष आता है। ईश्वर यदि कविता-प्रेमी होगा, उसे शब्द-योजना, अलंकार तशबीह और इश्तआरा का शौक़ होगा, वह केवल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अच्छी कविताओं व आला दर्जे की शायरियों पर ही रीझकर पुरस्कार व खिलअतें बाँटता होगा, उसमें यदि हृदय के अविकसित सच्चे भावों व दुख-दर्द के वेगों के समझने की शक्ति न होगी, तो फिर उसे अन्यायी और गैर-मुंसिफ कहना पड़ेगा, क्योंकि इस बात को लोग आम तौर से जानते हैं कि कवि और शायर लोग जितना झूठ और मुबालग़ा बोलते हैं, उतना दूसरा नहीं बोल सकता। इस विषय में यह प्रसिद्ध दोहा प्रमाण है—

बैद, चितेरा, ज्योतिषी, बया, बहेलिया, कब्ब ;
इनको नरक अवश्य है, औरन को जब-तब्ब ।

[नरकगामियों की इस पुरानी फेहरिस्त में आजकल यदि वकीलों, अख़बार के एडीटरों, कहानी-लेखकों, कम्पनियों के एजेंटों, कनवेसरों, प्रोपगैंडिस्टों, वक्तव्यबाज नेताओं, रिपोर्टकलाकुशल अधिकारियों और विज्ञापनबाजों इत्यादि के नामों का भी इजाफा कर लिया जाय तो शायद नादुरुस्त न होगा। परन्तु यह तो किसी बड़े कवि की इच्छा पर निर्भर है। अभी तो जो विषय चल रहा है, उसी पर आपको ध्यान देना है]

क्या कवियों द्वारा कल्पित ईश्वर ईश्वर नहीं ?

ऐसी दशा में कवियों ने कल्पनाओं के आधार पर अपनी कविताओं में जो ऊँची उड़ानें भरी हैं एवं शब्द-योजना व पद-विन्यास में अपनी काव्य-कला का जो जौहर दिखाया है, उसे सत्य मान लेना तो जानबूझकर अपने आपको एक भारी भ्रम में डाल देना होगा। विश्वब्रह्मांड का स्वामी यदि इन रचनाओं पर रीझकर डिगरी दे देता है और मूकभाषा की वास्तविक वेदनाओं व भावनाओं के समझने का यदि उसमें सामर्थ्य नहीं है, तो ऐसा ईश्वर तो बहुसंख्यक मानव-प्राणियों के लिए अत्यन्त अवांछनीय होगा। ऐसे ईश्वर से तो यह संसार नरक-निकेतन बन जायगा। लेकिन सच तो यही मालूम होता है कि असली ईश्वर आजकल के खुशामद-पसन्द और अक्लोतमीज़ से ख़ारिज राजा-रईसों की तरह मुशाइराबाजी की इज्ज़त का शिकार न होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोग पूछेंगे तो फिर देश-भर में यह जो तमाम भजन-कीर्तन, ईश्वर का गुण-गान, बड़े-बड़े धर्मग्रन्थों में धर्मकथाओं का असीम व्याख्यान हुआ और होता रहता है, यह क्या सब झूठ और व्यर्थ है ? असंख्य देवमंदिर और बड़े-बड़े धर्मस्थान, जिनके निर्माण में अरबों-खरबों रुपया लगा होगा, बड़े-बड़े तीर्थ और बड़े-बड़े धर्माचार्य, क्या सब व्यर्थ की वस्तुएँ हैं ? और सारा संसार जो इस सबको मानता है, क्या पागल है ?—यह कैसे मान लिया जाय ?

निःसंदेह शंका बहुत भारी और प्रश्न बहुत बड़ा है । इसका हल कर लेना कोई साधारण बात नहीं है । प्राचीन काल में बहुत संभव है भगवान् गौतम बुद्ध तथा तीर्थंकर महावीर ने ईश्वर-विषयक इस जटिलता के कारण ही अपने धर्म के व्याख्यानों में ईश्वर का चर्चा करना उचित न समझा हो, तथा दूसरी ओर महाप्रभु मसीह ने उसे परमपिता और हज़रत मोहम्मद ने उसे 'वहदहू लाशरीक' व 'रब्ब-उल-आलमीन' कहकर उसका व्याख्यान किया हो, तथा देश, जाति और सम्प्रदायों की संकुचित सीमाओं से मुक्त करके विश्वेश्वर, विश्वनाथ, दिनदयालु और रहमान इत्यादि अर्थों व विशेषणों से संसार को उसका परिचय कराया हो, तथा वास्तविक ईश्वर के स्थान पर देवताओं, मूर्तियों व अवतारों के पूजकों को काफिर और मुशरिक आदि नाम दिया हो,-और इन निष्ठाओं को 'मार' व 'शैतान' का बहकाना कहा हो। भारतीय संतों में कबीर साहब ने भी संसार में फैली हुई इन भ्रांतियों को "निरंजन की माया" कहकर दुनिया को सचेत किया है। इन महापुरुषों की वाणियों पर यदि थिर भाव से विचार किया जाय, तो, आशा है, असली तत्व या 'वास्तविक ईश्वर' और 'कल्पित ईश्वर' का भेद आसानी से समझ में आ सकता है।

असली ईश्वर और कल्पित ईश्वर

ईश्वर के साथ 'असली' व 'नकली' तथा 'वास्तविक' व 'कल्पित' विशेषणों को जुड़ा देखकर पाठक महोदय अधीर न हों। हम फिर स्पष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शब्दों में कहते हैं, 'असली ईश्वर' से हमारा प्रयोजन उस सर्वसम्मत ईश्वर से है जो संसार के समस्त विचारवान् और ईश्वरनिष्ठ विद्वानों द्वारा की गई परिभाषा के अनुरूप ठहरता है। इसके विरुद्ध वे ईश्वर जिनकी कल्पना किसी जाति-विशेष या संप्रदाय विशेष की रुचि के अनुसार उसके विशिष्ट स्वार्थों की सिद्धि के लिए काव्य कलाकार कवियों द्वारा हुई है, विषय को स्पष्ट करने के लिए उनके साथ 'नकली' या 'कल्पित' विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

अब तक हमने सर्वसम्मत 'असली ईश्वर' के सम्बन्ध में थोड़े-से विचार उपस्थित किये हैं, अब पाठक महोदय ज़रा 'कल्पित ईश्वर' को भी बुद्धि के प्रकाश में देखने का प्रयत्न करें।

'गुड़िया-सरकार' और 'गुड़िया खुदाई'

कल्पित और नक़ली ईश्वर को समझने के लिए, सौभाग्य से, आजकल एक ऐसा शब्द चल पड़ा है, जिससे उसके समझने में काफ़ी सहायता मिलती है। यह शब्द है 'गुड़िया'। 'गुड़िया' शब्द स्त्रीलिंग है, इसका पुल्लिंग है 'गुड्डा'। गुड़िया की जगह 'पुतली' या 'कठपुतली' शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है। कठपुतली के खेल में, पाठकों ने देखा होगा, पीछे छिपा हुआ मदारी तार से बँधी हुई पुतलियों को अपनी इच्छानुसार नचाकर दर्शकों को तमाशा दिखाता है और पुतलियाँ सजीव प्राणी की तरह उठती-बैठती-नाचती हैं।

गत महायुद्ध में जर्मनी के हिटलर ने जिन देशों को जीता, वहाँ अपनी इच्छा के अनुकूल शासन-प्रबन्ध चलानेवाली सरकारें क़ायम कर दीं। नारवे व फ्रांस आदि योरपीय देशों में नाजी जर्मनों द्वारा ऐसी आज़ाद सरकारें क़ायम हुई थीं जो अपने प्रभु के संकेत के अनुसार अपने देश का शासन-प्रबन्ध करती थीं और उन्हें स्थापित करनेवाले जर्मन उनके द्वारा उन देशों से अपनी इच्छानुरूप लाभ उठाते थे। ऐसी सरकारों को आजकल 'कठपुतली सरकार' या 'गुड़िया सरकार' कहा जाता है। पूंजीवादी देशों में एक अधिनायक बना लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता है, और सारा शासन-यंत्र उसी अधिनायक की आज्ञा से चलाया जाता है। अधिनायक के पीछे उस देश के बड़े-बड़े पूंजीपतियों की जमात होती है, जो उस गुड्डे (क्विसलिंग) के आदेशों द्वारा अपने स्वार्थों की सिद्धि किया करती है। देश के बड़े-बड़े लेखक, संपादक, कवि, व्याख्यानदाता और धर्माचार्य, जो उन पूंजीपतियों से धन और वेतन पाते हैं, उस अधिनायक को ईश्वर का स्वरूप व ईश्वर का अवतार तथा उसकी आज्ञाओं को ईश्वरीय आज्ञाएँ बताकर जनता को उसके प्रति सदा सच्चे रहने एवं उसकी आज्ञाओं का श्रद्धा और भक्ति के साथ पालन करने का उपदेश दिया करते हैं। राज-कर्मचारियों, सैनिकों तथा कौंसिलों के मेम्बरों को तो उस अधिनायक के आगे हमेशा वफादार रहने के लिए बाक़ायदा क़सम खानी पड़ती है। किन्तु वस्तुतः इस सारी श्रद्धा-भक्ति, शपथ, आज्ञा-पालन, वफादारी और फ़र्मांबरदारी का लाभ उन लोगों को पहुँचता है, जिन्होंने उस गुड्डे को ताज पहनाकर जनता के सामने खड़ा किया है। फारमोसा में च्यांगकाई शेक की 'नेशनलिस्ट चीनी सरकार' तथा कोरिया में 'सिंगमन री की सरकार' आजकल अमरीकी 'गुड़िया सरकारें' कहलाती हैं, जो अमरीकी इशारे पर चलती हैं। केवल कोरिया और फारमोसा ही नहीं, अमरीकी पूंजीपतियों ने कितने ही छोटे-छोटे अविकसित और ग़रीब देशों में 'गुड़िया-सरकारें' क़ायम कर रखी हैं। पहले इन देशों को अमरीका करोड़ों डालर क़र्ज देता है और फिर उस कर्ज का दबाव डालकर वहाँ की सरकारों का प्रेसिडेंट व सेक्रेटरी अपना गुड्डा चुनवा देता है, जो उसकी इच्छानुसार शासन चलाया करता है।

'गुड़िया सरकार' शब्द आजकल इतना प्रचलित, सुपरिचित और आमफहम हो गया है कि लोग अब इसकी व्याख्या भी सुनने से ऊब उठते हैं, किन्तु इस पुस्तिका का विषय चूँकि "ईश्वर के गुड्डे" है, इस कारण हमें 'गुड़िया सरकार' की व्याख्या करने को विवश होना पड़ा है। हम पाठकों से यह निवेदन करना चाहते हैं कि जिस प्रकार विजित देशों या अपने ही देश की शक्तिहीन जनता का सरलतापूर्वक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इच्छानुरूप दोहन व शोषण करने के लिए आजकल 'गुड़िया सरकारें' क़ायम कर देने की प्रथा चल पड़ी है, उसी तरह, पुराने धार्मिक युग में, शोषकों और धर्मगुरुओं ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए 'गुड़िया खुदाई' क़ायम कर दी थी। उदाहरण ढूँढ़ने के लिए आपको दूर न जाना होगा। अपने ही यहाँ ज़रा आँखें खोलकर पुराना इतिहास देखिए।

प्राचीन क्षत्रिय-ब्राह्मण संघर्ष और ब्राह्मणों की विजय

भारतवर्ष के धार्मिक इतिहास का सिंहावलोकन करने से आपको यह स्पष्ट दिखाई देगा कि इस देश में बाहर से आये हुए आर्यों के क़दम जम जाने के बाद प्रभुता व प्रधानता के प्रश्न पर पुरोहितों और राजाओं में संघर्ष हो गया था, जैसे कि आजकल शासन-सत्ता हथियाने के लिए देश में पार्टीबाजी और गुटबंदी जारी हो गई है। जीत और मुनाफ़े के माल के बँटवारे के समय साथियों में प्रायः झगड़ा हो जाया करता है। बहुधा चोर और डाकुओं के दल भी इसी बँटवारे के झगड़ों के कारण ही गिरफ्तार हो जाते हैं। क्षत्रिय चाहते थे कि हमारी प्रधानता रहे, और ब्राह्मण चाहते थे हमारी प्रभुता स्थापित हो। वसिष्ठ और विश्वामित्र तथा भृगुओं और हैहयों के संघर्ष प्रसिद्ध हैं। वसिष्ठ ने विश्वामित्र के और विश्वामित्र ने वसिष्ठ के सौ पुत्रों का निधन किया था और भार्गव परशुराम ने २१ बार हैहय-वंशी क्षत्रियों का विनाश करके, भारत-भूमि को क्षत्रिय-विहीन किया था। विश्वामित्र के हजार प्रयत्न करने पर भी वसिष्ठ ने त्रिशंकु को स्वर्ग पहुँचने नहीं दिया। इत्यादि।

ऐतिहासिक काल में भी गौतम बुद्ध और तीर्थंकर महावीर-जैसे ज्ञानी क्षत्रियों का धर्मगुरु के रूप में मैदान में आ जाना तथा ब्राह्मणों, वेदों एवं ब्राह्मणी धर्म की उपेक्षा-पूर्वक अपने जैन-बौद्ध धर्मों का प्रचार करना भी क्षत्रियों का ब्राह्मणों की प्रभुता व गुरुआई न मानने का प्रबल प्रमाण है। किन्तु बहुकालव्यापी इस ब्राह्मण-क्षत्रिय-संघर्ष के अंत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में ब्राह्मण विजयी हुए, और क्षत्री काँछ ढीली करके ब्राह्मणों से दब गये। तब इन दब्बुओं को लताड़ते हुए ब्राह्मणों ने ऊँची आवाज से कहा—"धिक् बलं क्षत्रिय बलं, ब्रह्मतेजो बलं बलम्।" क्षत्रियों को अपने चरणों का दास और अपने प्रभुत्व को अमर बनाने के लिए चतुर ब्राह्मणों को 'गुड़िया खुदाई' की स्थापना की युक्ति सूझी। उन्होंने अवतारवाद की कल्पना द्वारा 'राम' और 'कृष्ण' के क्षत्रिय आदर्श खड़े किये और उनकी धर्मभीरुता, ब्राह्मण-वत्सलता, अलौकिक सामर्थ्य की प्रशंसा के पुल बाँधते हुए उन्हें साक्षात् ईश्वर घोषित कर दिया, असली ईश्वर से भी उनके ऐश्वर्य को बढ़ाकर उनसे अपने प्रभुत्व के संरक्षण का काम लिया तथा अपने बुद्धि-कौशल से क्षत्रियों-सहित समस्त जनता पर अपनी अद्भुत गुरुआई, महिमा, श्रेष्ठता, पूजनीयता एवं शाप देने के भय का आतंक जमा दिया!

राम-रावण युद्ध का ऐतिहासिक रहस्य

यद्यपि इधर कुछ लोग आनाकानी करने लगे हैं, फिर भी यह सर्वमान्य सत्य है कि कई हज़ार साल पहले आर्य लोग उत्तरी ध्रुव अथवा मध्य एशिया से उत्तर भारत में आये, और धीरे-धीरे फैलते हुए पंजाब से आगे बढ़कर उन्होंने उत्तर प्रदेश में अयोध्या को अपनी राजधानी बना लिया। इस समय भारत के मूल-निवासी द्रविड़ आदि राजे उत्तर भारत से अपनी सत्ता हटाकर दक्षिण भारत में जा डटे थे। आर्यों की यह पुरानी शैली रही है कि प्रत्येक नये देश में इनके मिशनरी आगे चलते रहे हैं और फौज पीछे। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यों की इस चाल को उस समय यहाँ के मूल-निवासी समझ गये थे, और वे आर्य-मिशनरियों के यज्ञादि लूट-खसोट-हड़प फूँक-स्वाहा के लोमहर्षण धर्मकृत्यों में नाना प्रकार के विघ्न उपस्थित करके उन्हें भंग कर देते थे। इस विघ्न-कारक आंदोलन के 'गण-नायक' अर्थात् 'जन-नेता' विघ्नेश गणेशजी होते थे, जो 'शिव-पुत्र' कहलाते थे। शिव की आराधना से शक्ति प्राप्त करके यहाँ के मूल-निवासी, जिन्हें ब्राह्मणी-साहित्य में दैत्य और राक्षस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा गया है, हमेशा वैदिक देवों और आर्यों से लड़ते थे। राम के समय में मध्यभारत के अमरकंटक में मूल-भारत-वासिनी गोंड-जाति का एक शक्तिशाली शैवी राजा रावण था, जिसने त्रिकूट की विशाल ऊँची घाटी में 'लंका' नाम की एक मनोहर राजधानी बनाई थी। रावण वैदिक देवों और वैदिक आर्यों का घोर विरोधी था। देवराज इंद्र-सहित प्रायः सभी वैदिक देवगण उससे थर-थर काँपते और भागे-भागे फिरते थे। गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दों में, रावण ने ब्राह्मणी धर्म के विरुद्ध, अपने साथियों को, इस प्रकार आदेश दे रखा था—

सुनहु सकल रजनीचर जूथा ; हमरे बैरी विबुध-बरूथा
ते सनमुख नहिं करहिं लराई ; देखि सबल रिपु जाहिं पराई
तिनकर मरन एक बिधि होई ; कहहुँ बुझाइ सुनहु सब कोई
द्विज-भोजन, मख, होम, सराधा ; सबकै जाय करौ तुम बाधा

रावण की इस आज्ञा का जो परिणाम हुआ, उसे भी तुलसीदासजी के ही शब्दों में पढ़ और समझ लीजिए—

शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई ; देव बिप्र गुरु मान न कोई
नहिं हरि-भजन, यज्ञ, जप, दाना ; सपनेहुं सुनिय न वेद-पुराना
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला ; सो सब करहिं वेद-प्रतिकूला
जेहि-जेहि देस देव-द्विज पावहिं ; नगर-गाँव-पुर आगि लगावहिं

पाठक देखेंगे कि इस वर्णन में उसी आंदोलन की प्रतिध्वनि है जिसे गत महायुद्ध-काल में आक्रमणकारी के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, यूनान और चीन आदि देशों की जनता ने जारी कर रखा था।

कहना न होगा कि मूल-निवासी गोंड-राजा रावण का यह विरोध वस्तुतः आगन्तुक वैदिक आर्यों की मुल्कगीरी के खिलाफ अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा की भावना से था, जो कि प्रत्येक देशवासी देशभक्त को आक्रमणकारी के गतिरोध में उसकी प्रत्येक चाल में बाधा डालकर करना ही चाहिए। इसे 'पाप' आक्रमणकारी के हिमायती गुरु और दलचटे ही कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम और रावण की तुलनात्मक नैतिकता

हमारे देश में तुलसी-रामायण का सबसे अधिक प्रचार है। यह स्पष्ट है कि तुलसीदासजी राम को परात्पर परमेश्वर और अपना प्रभु, स्वामी, साहब, सरकार, गरीबनेवाज मानते थे और अपने आप को उनका अनन्य दास। उन्होंने दास्य-भक्ति में डूबकर अपना साहित्य-कला-पूर्ण महाकाव्य लिखा। फिर भी उनकी रामायण में, रावण की नैतिकता रामजी से बढ़ी-चढ़ी दिखाई देती है। आर्य वैदिक देवों और ब्राह्मणों के साथ धार्मिक विरोध के अतिरिक्त रावण के किसी भी सामाजिक या राजनीतिक कार्य में नैतिकता और सामाजिक सभ्यता का पतन नहीं दिखाई देता। विरुद्ध इसके देवों और ब्राह्मणों के रक्षक व सेवक होते हुए भी श्रीरामचंद्रजी की सामाजिक सभ्यता गिरी हुई है। रामचंद्रजी तीर मारकर ताडुका नामक एक स्त्री का वध करते हैं; रावण की विधवा बहन की नाक और कान कटवाते हैं; भाई के साथ परस्पर मल्लयुद्ध करते हुए बालि को बहेलिए की तरह वृक्ष की आड़ से तीर का निशाना बनाते हैं, और गौरों की कौन कहे स्वयं अपनी पत्नी सीता की लंका से आने पर अविश्वासपूर्वक पहले अग्नि-परीक्षा लेते हैं और फिर राज-सिंहासन पर विराजमान होकर उस निरपराध गर्भिणी महारानी को तिरस्कृत करके वन में अकेली असहाय छुड़वा देते हैं। इतना ही नहीं, अंत में वन में उत्पन्न उसके बेटों को भी उससे छीनकर उसे फिर अग्नि-परीक्षा देने को विवश करते हैं, और इस नारी-अपमान को सहन न करके वह भूमिजा अपनी 'भुइयाँ माता' से अपने इस तिरस्कार के लिए रोती है, तब धरती फटती है और जीवित सीता उसमें समा जाती है! इसके सिवा उन लोगों के साथ जिन्हें कि ब्राह्मणी शास्त्रों में 'शूद्र' कहा गया है, श्री रामचन्द्रजी का जो आदर्श न्याय था, इसका उदाहरण बेचारा शंबुक है जिसका तप करने के अपराध में श्री रामचन्द्रजी ने अपने हाथ से शिर काट दिया था। इत्यादि। श्रीरामजी के इन कामों का समर्थन तो कदाचित् कोई भी सुसंस्कृत मानव न करेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसके विरुद्ध रावण की सभ्यता देखिए। उसने अपने गुरुदेव शिव का धनुष तोड़कर महासुंदरी सीता से विवाह करना पसंद नहीं किया। उसने बहन की नाक काटनेवाले की उस स्त्री का अपहरण-मात्र किया जो दूसरी स्त्री की नाक-कान काटे जाने पर हँसी थी. परंतु उससे बलात्कार नहीं किया। उसने हनुमान द्वारा वाटिका उजाड़े जाने और रखवारों एवं पुत्र की हत्या करने पर भी दूत जानकर हनुमान् का वध नहीं किया, केवल अंगभंग करने अर्थात् पूछ मात्र काटने का दंड दिया। वह हमेशा अपनी सभा से सम्मति लेकर सब काम करता था। मृत्युशय्या पर भी उसने शत्रु के भाई लक्ष्मण को राजनीति का उपदेश दिया। इत्यादि। ये सब बातें रावण की महानता का ज्वलंत परिचय देती हैं।

ब्राह्मणों के शाप का आतङ्क !

रामायण में यह बताया गया है कि राम का अवतार रावणादि असुरों को मारने और देव-ब्राह्मणों की रक्षा करने के लिए हुआ था, किन्तु यह बात भी ध्यान में रखने की है रामावतार के समय आर्यों के भीतर ब्राह्मण-क्षत्रिय-संघर्ष भी मौजूद था। पौराणिक परम्परा के अनुसार इस समय यद्यपि भृगुओं और हैहयों के संघर्ष का अन्त-सा हो गया था, किन्तु विश्वामित्र और वसिष्ठ की चोटें तो चल ही रही थीं, जैसा कि रामायण से भी सिद्ध है। दूसरी खास बात यह भी ध्यान में रखने की है कि राम के चरित्र का ऐतिहासिक आधार अत्यन्त संदिग्ध है, उनके चरित्र-चित्रण में कवि-कल्पना का बहुत बड़ा हाथ है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का कहना है कि राम के सम्पूर्ण आदर्श की रचना एवं राम-चरित्र की कल्पना पुष्यमित्र शुंग की ब्राह्मणी विजय को ध्यान में रखकर बौद्धों के 'दशरथ जातक' को उलट-पलटकर ब्राह्मणों ने अपने शाप के प्रताप का आतंक जमाने के लिए की। ज़रा गौर कीजिए, ब्राह्मणों के शाप से बेचारे विष्णु भगवान को ईश्वर होते हुए भी माता की कोख से जन्म लेकर जंगल में जाना और स्त्री-विरह का दुःख भोगना पड़ा; ब्राह्मण के शाप से राजा दशरथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को पुत्र-वियोग में मरना पड़ा, ब्राह्मण के शाप से विष्णु भगवान् के पार्षदों अथवा राजा प्रतापभानु को राक्षस का तन धारण करना पड़ा। रामायण ही नहीं, संस्कृत-साहित्य की जिस कथा को देखिए उसका हेतु या तो ब्राह्मण का शाप है या वरदान। महाकवि कालिदास की शकुंतला में शकुंतला का पति राजा दुष्यंत ब्राह्मण के शाप से अपनी प्रियतमा पत्नी को न पहचान सका और उसको त्याग दिया एवं उसी महाकवि के अनुपम काव्य मेघदूत का यक्ष भी ब्राह्मण के शाप से अपनी प्राणवल्लभा यक्षिणी से वियुक्त हुआ। इत्यादि। संस्कृत का सारा कथा-साहित्य प्रायः ब्राह्मणों के शाप के आतंकवाद से परिपूर्ण है!

विष्णु के अवतार किस लिए होते हैं ?

ऊपर हम अवतारों के सम्बन्ध में विचार कर रहे थे। अवतारों के सम्बन्ध में ब्राह्मणों ने स्पष्ट घोषित कर दिया है कि जब कभी संसार में नीच असुरों की संख्या बढ़ जाती है, और वे अहंकारी धर्म-विरोधी बनकर देव-ब्राह्मणों को नहीं मानते, वरन् उद्दंड हो नाना प्रकार के विरुद्ध आचरण करके ब्राह्मणों को क्लेश व हानि पहुँचाते हैं, तब ब्राह्मणों के दुख से द्रवित होकर उनके परम हितैषी विष्णु भगवान् अवतार लेते हैं और दुष्ट असुरों का संहार करके देव-ब्राह्मणों की रक्षा करते एवं वेद-शास्त्रों में वर्णित धर्म तथा ब्राह्मणों की बाँधी वर्णाश्रम-मर्यादा की संसार में स्थापना करते हैं। यथा—

जब-जब होई धरम की हानी; बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
तब-तब प्रभु धरि मनुज-सरीरा; हरहिं कृपानिधि बिप्रन्ह-पीरा
अवगुन तजि सबके गुन गहहीं; बिप्र-धेनु-हित संकट सहहीं
जय-जय सुरनायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवन्ता
गो-द्विज-हितकारी, जय असुरारी, सिंधुसुता प्रिय कंता

ये विष्णु के अवतार ब्राह्मणों के अनन्य भक्त, आज्ञानुवर्त्ती और सेवक होते हैं। ये ब्राह्मणों को भोग-ऐश्वर्य और धन-धान्य से परिपूर्ण कर देते हैं, तथा अपने जीवन में सब प्रकार से ब्राह्मणों की सेवा-पूजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके संसार में ब्राह्मण-महिमा और ब्राह्मणी प्रभुत्व का डंका बजवाकर परमधाम को चले जाते हैं। इनके चले जाने पर ब्राह्मण कवि और लेखकगण उनके चरित्रों पर बड़े-बड़े आख्यान-उपाख्यान, पुराण-महा-पुराण, नाटक, उपन्यास, चंपू, संगीत, भजन इत्यादि अपरिमित साहित्य का सृजन करते और नाना प्रकार की ललित कलाओं द्वारा उसका प्रचार करके भोली-भाली जनता को उनका अनन्य भक्त और दास बना देते हैं, और इस सीधे उपाय से बड़ी सरलता के साथ उनका स्वार्थ सिद्ध हो जाता है। क्योंकि जब साक्षात् परात्पर परमेश्वर ने अवतार धारण करके ब्राह्मणों की सेवा-पूजा की, तो फिर उस महाप्रभु के भक्तगणों को तो ब्राह्मणों के चरणों की सेवा से विमुख रहने का कोई कारण नहीं रह जाता। नीचे लिखे तुलसी-वचनों से यह बात स्पष्ट हो जायगी—

तप-बल विप्र सदा बरियारा; जिन्हके कोप न कोउ रखवारा
चल न विप्र-कुल सों बरिआई; सत्य कहउ दोउ भुजा उठाई
सत्यकेतु-कुल कोउ नहिं बाँचा; विप्र-श्राप किमि होइ असाँचा
मसक-दंस बीते हिम-त्रासा; जिमि द्विज-द्रोह किये कुल-नासा
सुनु गंधर्व कहउँ मैं तोही; मोहि न सोहाइ विप्र-कुल-द्रोही
सापत-ताड़त परुष-कहन्ता; विप्र पूज्य गावहिं अस सन्ता
पूजिय विप्र सील-गुन-हीना; सूद्र न गुनगन-ज्ञान-प्रवीना
मंगल-मूल विप्र-परितोषू; दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा; मन-क्रम-वचन विप्र-पद-पूजा

मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव :
मोहि समेत विरंचि सिव; बस ताके सब देव ।

तुम गुरु-विप्र- धेनु-सुर - सेवी; तसि पुनीत कौसल्या देवी
भूसुर-भीर देखि सब रानी, सादर उठीं भाग्य बड़ जानी
पावँ पखारि सकल अन्हवाये; पूजि भली विधि भूप जेंवाये
चार लक्ष वर धेनु मँगाई; कामधेनु सम सील सुहाई
सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं; मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं
विप्रवृंद सुर पूजत राजा; करत राम हित मंगल काजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विप्र वृंद वंदे दोउ भाई; मनभावती असीसें पाई
कवच अभेद विप्रपद पूजा; एहि सम विजय उपाय न दूजा
अस कहि रथ रघुनाथ चलावा; विप्र-चरन-पंकज सिर नावा
सकल द्विजन्ह कहुँ नायेउ माथा; धरमधुरंधर रघुकुल नाथा
सब द्विज देहु हरिष अनुमानन; रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन

महर्षि दयानन्द और उनका सत्यार्थप्रकाश

यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक न होगा कि गत शतब्दी में भारत में अंग्रेजी अमलदारी क़ायम होने पर पाश्चात्य शिक्षा, पश्चिमी बुद्धिवाद और पाश्चात्य भौतिक विज्ञान के प्रचार तथा पश्चिमी ईसाई धर्म के मिशनरियों के धार्मिक तर्कवाद से ब्राह्मणी धर्म की जड़ें हिल गई थीं, बुद्धिवादी लोगों की श्रद्धा ब्राह्मणी धर्म और ब्राह्मणों के गुड्डे ईश्वरों से हट चली थी, और ब्राह्मणी धर्म के शोषण व अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू हजारों की संख्या में ईसाई व मुसलमान हो रहे थे, क्योंकि ईसाई और मुसलमानों का 'गाड' या 'अल्लाह' ब्राह्मणी राम और कृष्ण की तरह गुड्डा ईश्वर न था, जो एक धर्म-व्यवसायी जाति विशेष के हितों के लिए जन्म लेकर उसके विरोधियों का संहार करता और उसके इशारों पर नाचता हो। इस प्रकार धर्म का क़िला गिरता देखकर दूरदर्शी ब्राह्मणों की चिंता बहुत बढ़ गई थी। इसी समय ब्राह्मणों में एक महर्षि उत्पन्न हुआ, जिसका नाम दयानन्द सरस्वती था। उसे एक उपाय सूझा। उसने ईसाई और मुसलमानी धर्म की शैली पर 'आर्यसमाज' नाम की एक संस्था का प्रवर्तन किया, और इस संस्था की मूलाधार 'सत्यार्थ प्रकाश' नाम की एक पुस्तक लिखकर ब्राह्मणी धर्म को एक नये साँचे में ढालने की कोशिश की। सत्यार्थप्रकाश के पहले समुल्लास में ईश्वर की ही व्याख्या की गई और इसलामी धर्म की तरह बड़े जोरों के साथ 'एक ईश्वरवाद' का ढिंढोरा पीटा गया; मूर्तिपूजा बहुदेववाद और अवतारवाद का खंडन किया गया; ब्राह्मणों के राम और कृष्ण आदि गुड्डे ईश्वरों को वास्तविक ईश्वर न मानकर 'आदर्श

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महापुरुष' बताया गया। इसके सिवा ब्राह्मणों के जन्मवादी वर्ण-विधान का खंडन करके उसे गुण-कर्म के आधार पर स्थापित करने का सुझाव दिया गया; फलित ज्योतिष, पौराणिक क्रिया-कलाप, सत्यनारायण की कथा, गरुड़पुराण का दसवाँ-तेरहवीं, मृतक श्राद्ध और गया आदि को पोपलीला ठहराया गया; ब्राह्मणी तीर्थों को केवल पुरानी यादगारें तथा उनमें स्नान-दर्शन के महाफलों को कोरी ठगविद्या और पंडे-पुजारियों की जालसाजी व लूट-खसोट बताया गया। इत्यादि। जहाँ तक दोषपूर्ण ब्राह्मणी धर्म की 'ओवरहालिंग' का प्रश्न था महर्षि दयानंद का यह सुधार सामयिक और अत्युपयोगी था, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम समुल्लासों में, दूसरे महान् धर्मों के साथ—जो ब्राह्मणी धर्म से अपेक्षाकृत कहीं अधिक अच्छे, सुधरे और सभ्यता-पूर्ण थे—मेल, सद्भाव व सहानुभूति रखते हुए सुधार-कार्य करने के स्थान पर, बहुत तीखे शब्दों में 'वेद-विरुद्ध' कहकर उन्हें ललकारा और उनका खंडन किया गया।

आर्यसमाज के साथ ब्राह्मण पंडितों का पैक्ट और उसका परिणाम पाकिस्तान

पहले तो ब्राह्मण आर्यसमाज से बहुत भड़के, क्योंकि इसके भीतरी सुधारों से उनकी धर्मव्यवसाय से होनेवाली आमदनी में बड़ा धक्का लगता था और जन्मवादी वर्णव्यवस्था ध्वस्त होने से उनकी जन्मगत श्रेष्ठता को भी भारी ठेस पहुँचती थी, अतः ब्राह्मण पंडितों ने इसका तीव्र विरोध और आमूल खंडन किया। लेकिन इसके दूसरे बाहरी अंग को, जिसके द्वारा दूसरे धर्मों के प्रति घृणा और विद्वेष के भावों की जागृति होती व उत्तेजना फैलती थी, अत्यंत उपयोगी और मतलब की चीज़ समझकर कुछ अग्रसोची ब्राह्मण इसके साथ इस शर्त पर पैक्ट कर लेने को भी तैयार हो गये कि आर्यसमाज मूर्तिपूजा, श्राद्ध, अवतार, तीर्थ इत्यादि ब्राह्मणों की व्यावसायिक बातों का खंडन न किया करे; हाँ ईसाई-मुसलमान आदि दूसरे धर्मों का जी खोलकर खंडन करे, और विधर्मियों की शुद्धि करके उनकी एक अलग 'आर्य-बिरादरी' भी बना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दे। इस पैक्ट पर बड़ी तेज़ी से कार्य हुआ। 'वैदिक धर्म की जय' बोलकर कुछ चंट ब्राह्मण पंडित आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता बनकर उसका संचालन करने लगे। फलतः ईसाई, मुसलमान और जैनी आदि वेदविरुद्ध धर्मों के साथ आर्यसमाज के अगणित शास्त्रार्थ हुए, जलसों में खुल्लमखुल्ला आर्यसमाज को 'सफरमैना की पल्टन' कहा जाने लगा, और इस धार्मिक संघर्ष के परिणाम में क्रमशः देश में एक ऐसा साम्प्रदायिक विद्वेष का बवंडर उठा जिसके फलस्वरूप बेशुमार हिंदू-मुसलिम दंगे हुए, राष्ट्रीयता की रथी निकल गई, और सैकड़ों वर्षों की संतों और महापुरुषों द्वारा स्थापित सहिष्णुता की रगड़ से बना भारत का शांत वायुमण्डल साम्प्रदायिक विद्वेष की वायु से व्याप्त हो गया!

इस आर्यसमाज-ब्राह्मण पैक्ट का देश को अत्यन्त अवांछनीय कुफल मिला। जिस प्रकार आर्य हिटलर ने संसार पर नाजी-प्रभुत्व स्थापन के लिए सार्वभौम महायुद्ध छेड़कर यहूदियों को बलिदान का बकरा बनाया था, इसी प्रकार समस्त भूतल पर या कम-से-कम समस्त भारत में 'आर्यराज्य' अथवा 'ब्राह्मण-प्रधान हिंदू-राज्य' क़ायम करने की महत्ती आकांक्षा से मुसलमान और ईसाई आदि वेद-विरुद्ध धर्मों को बलिदान का बकरा बनकर 'यूप' से बाँध दिया गया था, किंतु सारा गुड़ गोबर तब हो गया जब मनचले वैदिक आर्यमिशनरियों ने शुद्धि करके सबको उदरस्थ कर जाने के इरादे से खंडन के खड्ग को ऊपर उठाया ही था कि रस्सी तुड़ाकर बकरे मैदान में भग गये और ऐसा ऊधम मचाया कि भारत की एक राष्ट्रीयता की टाँग तोड़ दी और अखंड भारत के दो खंड करके देश के एक विशाल भाग को पाकिस्तान बना दिया!

साम्प्रदायिकता-विस्तार का एक नया लटका, कीर्तन

परन्तु पाकिस्तान बन जाने से ब्राह्मणी धर्म का अपरिमित हित हुआ। आबादी-परिवर्तन के समय जो मार-काट, क़त्ल, लूट, फ़ूक, अपहरण और विनाश का बीभत्स कांड हुआ, उससे साम्प्रदायिक विद्वेष की आग भड़की जिससे लोकतंत्र का नया पौदा तो झुलस गया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी जगह 'हिंदू-राज्य' और 'हिंदू-संस्कृति'—जिसका अर्थ 'ब्राह्मणी राज्य' और ब्राह्मणी 'संस्कृति' है—के गिरते और सूखते हुए महावृक्ष की जड़ें स्वत: और साग्रह सींची जाने लगीं। अभी कल जो जनता ब्राह्मणी धर्म से निराश और पराङ्मुख हो रही थी, वह अब वैदिक आर्य-ऋषियों की अनन्य भक्त बन गई, और उसकी सारी बेचैनी धार्मिक शत्रुता और साम्प्रदायिक विद्वेष की ज्वाला में परिणत हो गई। अभी कल जो आर्यसमाजी मूर्तियों व सत्यनारायण की कथा आदि का खण्डन करता देखा गया था, आज हिन्दू-मंदिरों और कथाओं का ज़बर्दस्त हिमायती बनकर उनके लिए विधर्मियों से लड़ने और जान देने को तैयार है। चतुर और अवसरवादी ब्राह्मणों ने इस परिस्थिति से अधिकाधिक लाभ उठाने का उपक्रम किया। उन्होंने अपने धर्म की जड़ें मज़बूत करने के लिए 'कीर्तन' नाम का एक नया लटका निकाल दिया। आज कल वही चालू है। सारे देश में कीर्तन की धूम है। बड़े-बड़े कीर्तन-कला-निधि उत्पन्न हो गये हैं, जिनकी ललित कलाओं में ऐसा जादू है कि जनता मोहित हो जाती है। देश के एक ओर से दूसरे छोर तक नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, मुहल्ले-मुहल्ले कीर्तन-मंडलियाँ क़ायम हैं। घर-घर कीर्तन और अखंड कीर्तन होने का रिवाज चल पड़ा है। यहाँ तक कि सरकारी रेडियो द्वारा भी कीर्तन सुनाया जाता है। शहरों में अखंड कीर्तनों में लाउडस्पीकर लगाकर वह हंगामा मचाया जाता है कि पड़ोसियों की नींद हराम हो जाती है। बरसाती मेंढकों की तरह बेशुमार रंग-बिरंगे स्वामी निकल पड़े हैं। इनमें कितने ही अंग्रेजी पढ़े और 'योरप रिटर्न' भी बताये जाते हैं—बड़े फैशनेबुल, बड़े अप-टु-डेट, बड़ी छटा वाले, बड़े वाक्पटु, ऐसी मँजी हुई मीठी बोली और निराली अदा-अन्दाज कि तारीफ नहीं हो सकती। स्वामीजी के सफ़ाचट चेहरे में ओठों और गालों की चिकनाई, दाँतों की सफाई और केशों का विन्यास तो देखते ही बनता है। मोहिनी वाणी और मधुर मुसकान का क्या पूछना है। गीता और रामायण के व्याख्यानों में धरती-आकाश एक कर दिया जाता है, अवतारवाद की पुष्टि और भक्तिवाद के सीमातीत प्रचार में तमाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुनिया की फिलासफी छौंकी और साइंस की टांगें तोड़ी जाती हैं। कला-पूर्ण व्याख्यानों में फिलासफी, लाजिक, साइंस, पोएटरी और अन्ध-परंपरा सबकी एकसाथ कचूमड़ निकाली जाती है और इस समस्त महा-प्रयत्न के परिणाम में ढोल, मृदंग, हारमोनियम, वेला, सारंगी, झाँझ, करताल, मंजीरा आदि साजबाज व ताल-स्वर और हंगामे के साथ "हारे रामा, हारे कृष्णा" की रट लगवाकर भोलीभाली जनता को राम-कृष्ण आदि ब्राह्मणों के गुड्डे ईश्वरों का अन्धभक्त बनाया जाता एवं इस निराले चमत्कार-पूर्ण ढंग से अपनी क़ायम की हुई "गुड़िया खुदाई" की महिमा बढ़ाकर ब्राह्मणशाही धार्मिक साम्राज्य की हिलती हुई जड़ें मज़बूत की जाती हैं। जान पड़ता है, जैसे कीर्तन की चक्की में हिन्दुओं के मस्तिष्क को पीसकर आंवले का मैदा बना दिया जायगा, एक भी दाना न बचेगा, दाने की कौन कहे खंडे भी न रहने पायेंगे। फिर अन्धेरखाते के शत्रु बुद्धिवाद का अंकुर उगेगा किस तरह ?

उपसंहार

तात्पर्य यह कि आज का प्रत्येक विशुद्ध बुद्धिवादी मस्तिष्क यह खूब समझता है कि वीर-पूजा और अपने वीरों को ईश्वर बनाकर अपनी रुचि और अपनी मनोवृत्तियों के अनुरूप नचाना, उनसे रास-विलास कराना, अपने मन्तव्यों का उनके द्वारा प्रचार एवं अपने विरोधियों का उनके हाथों संहार कराना—यह सब पुराने युग के "पापों का जातीय अधिनायकवाद" (Brahmanic National Facism) है, हिटलरी नाजी फासिस्ट-वाद। अपने स्वार्थों एवं अपनी सुविधाओं के अनुरूप ईश्वर के नाम से एक 'गुड्डा' गढ़ना और अपनी काव्य-कला द्वारा हज़ारों तरह के ढोंग रचकर, हर तरह के उपायों द्वारा भोलीभाली जनता को उसके नाम-रूप-लीला-धाम का अंधभक्त बनाना धार्मिकता नहीं; अपितु प्रज्ञापराध है। इसकी पृष्ठभूमि में घृणित स्वार्थपरता एवं हेय प्रपंच है। प्रतिवर्ष देश के करोड़ों रुपयों का अपव्यय कराकर रासलीला कराना अथवा रावणादि के कागज़ी पुतले फूकना एक उपहासास्पद हुरदंग है, भारतीय संस्कृति नहीं। †

† रावण पापी था या पंडित, इसे "रावण और उसकी लंका" पुस्तक में पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रेल, तार, जहाज, वायुयान और रेडियो आदि के आविष्कार से आज की दुनिया सिमटकर एक जगह आ गई है और दुनिया के विचारवान मस्तिष्क अब युद्धों को असंभव करके विश्वशांति की स्थापना का प्रयत्न कर रहे हैं। ईश्वर के संबंध में यह बिलकुल स्पष्ट हो गया है कि दुनिया ईश्वरवाद और अनीश्वरवाद, इन दो कैम्पों में बँटी हुई है। इन दोनो के बीच का रास्ता यदि कोई है तो वह बुद्ध-प्रदर्शित उनका माध्यमिक मार्ग (Middle path) है जिसमें धर्म, परमार्थ और निर्वाण का सर्वोच्च ज्ञान होते हुए भी आत्मा और ईश्वर-विषयक उपेक्षा-मात्र है, न खंडन है और न मंडन। और इस मार्ग के आविष्कृत होने का श्रेय भारत-भूमि को है और यही प्राचीन भारतीय संस्कृति है। भगवान् बुद्ध ने अनेक स्थलों पर अपने उपदेशों के अन्त में कहा है—"एष धम्मो सनन्तनो" अर्थात् "यह है सनातन से चला आया मानव धर्म।"

महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार भगवान् गौतम बुद्ध के अंतिम दिनों में जब आनंद ने पूछा—"भगवान् ने ८४ हजार धर्म-स्कंधों का उपदेश करके भी ईश्वर के संबंध में कुछ नहीं कहा", तो भगवान् ने पूछा—"आनंद! दूसरे लोग ईश्वर के संबंध में क्या कहते हैं?" आनंद ने कहा—"भगवन्! कुछ लोग कहते हैं, ईश्वर है और कुछ कहते हैं नहीं है।" भगवान् ने पूछा—"इन ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी दोनो ने परस्पर विचार करके कोई निर्णय क्यों नहीं कर लिया?" आनंद ने कहा—"भगवन्! इनमें विवाद तो बहुत होता है, पर अब तक कोई निर्णय नहीं हुआ।" भगवान् ने फिर पूछा—"कब तक निर्णय हो जाने की संभावना है?" आनंद ने कहा—"दोनो अपने-अपने पक्षों के समर्थन में अटल हैं, शीघ्र निर्णय की आशा दिखाई नहीं देती।" तब भगवान् ने आदेश दिया—"अच्छा आनंद! जब तक ये लोग इस विवाद में लगे हैं, तुम लोग शील-संपन्न हो आश्रव-रहित चित्त से संसार के अनंत कोटि दुखित प्राणियों के दुःखमोचन का उपाय करो। फिर जब ये लोग कुछ निर्णय कर लेंगे, तो सुन लेना।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारा स्वतंत्र जातीय साहित्य

विजित लोगों के स्वतंत्र साहित्य को नष्ट करके उनकी सभी अच्छी बातों को अपने साँचे में ढालकर उन्हें उलटे पाठ पढ़ाना एवं उनकी महत्वाकांक्षाओं को कुचलकर उन्हें अपना दास बनाकर उनका शोषण, और दलन करना विजेताओं का स्वभाव रहा है। भारत में दबे-पिछड़े लोगों के साथ यही हुआ! अब हमारे उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि हमारा स्वतंत्र जातीय साहित्य हो जो हमारी मानसिक गुलामी दूर करके हम में जीवन-ज्योति जगा दे। अतएव नीचे-लिखी पुस्तकें मँगाकर पढ़िए और अपने बंधुओं में घर-घर इनका प्रचार कीजिए।

१. मूलभारतवासी और आर्य, तीसरा संस्करण	(छपने में)
२. सृष्टि और मानव-समाज का विकास, दूसरा संस्करण	(छपने में)
३. भारत के आदि-निवासियों की सभ्यता तीसरा संस्करण	१० आना
४. भारतीय चर्मकारों की उत्पत्ति, स्थिति और संख्या	६ ,,
५. रामराज्य न्याय नाटक (शंबूक मुनि बलिदान)	४ ,,
६. आदिवंश का डंका (गायन)	७ ,,
७. बहुजन हुंकार (गायन)	२ ,,
८. शोषित-पुकार (गायन)	२ ,,
९. हरिजनगोद्दार छूत-छत्तीसी (गायन)	२ ,,
१०. संत रैदास साहब, दूसरा संस्करण	(छपने में)
११. बाबासाहेब का नागपुर का भाषण	२० न. पै.
१२. बाबासाहेब का उपदेश और आदेश	२० ,,
१३. ईश्वर और उसके गुड्डे	५० ,,
१४. बाबासाहेब का संघर्षमय जीवन	(छपने में)
१५. आर्यों की रंगभेदी नीति, छूत-अछूत व नीच-ऊँच की जड़ें	(छपने में)
१६. रावण और उसकी लंका	(छपने में)
१७. शिव-तत्त्व-प्रकाश	(छपने में)

मँगाने का पता—

बहुजन कल्याण प्रकाशन, ३६०/१९३ मातादीन रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

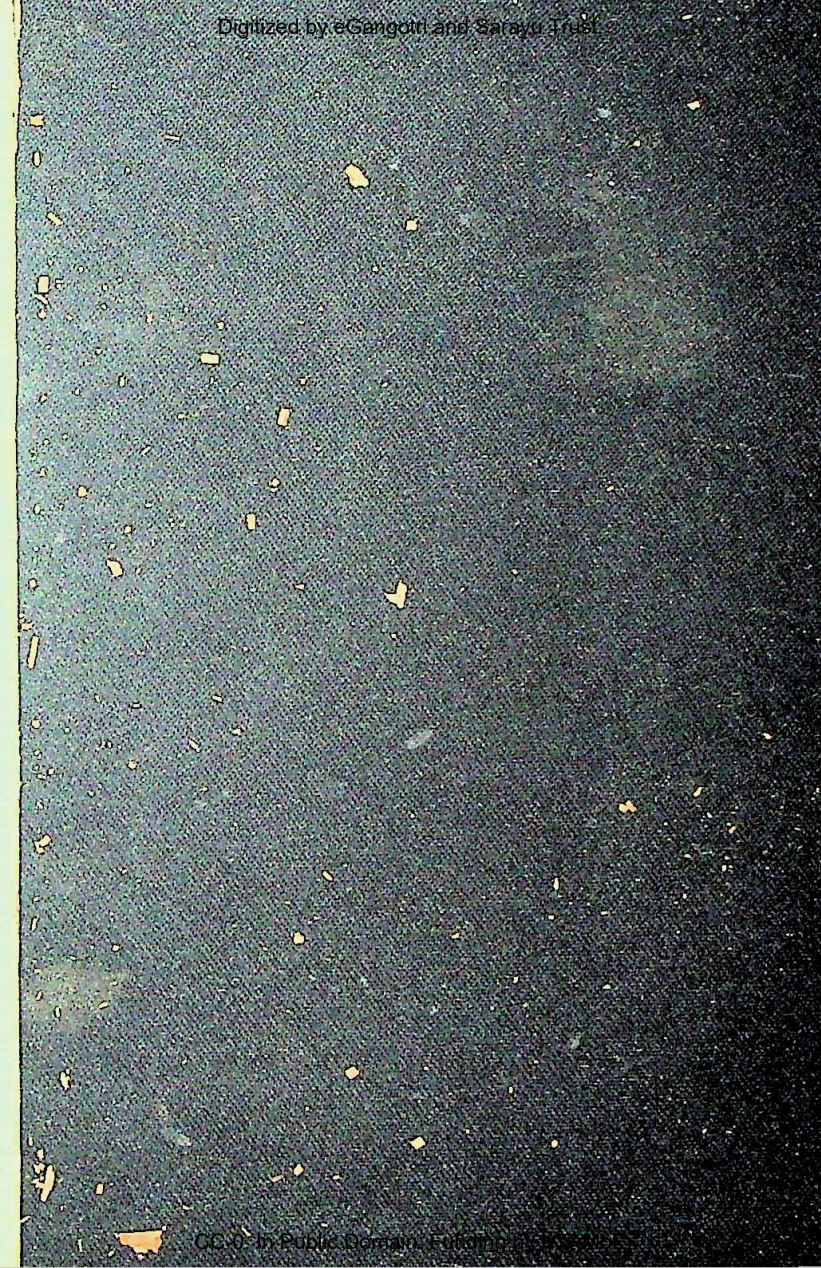

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.